गुड़ खाने के चक्कर में कहां फंस गए?

अभिजीत गुप्ता
भूगोल विभाग
श्री महंथ रामाश्रय दास स्नातकोत्तर महाविद्यालय भुड़कुड़ा, ग़ाज़ीपुर

यह कहानी मेरी, यानी गोलू की है, और मेरे तीन दोस्तों की—प्रकाश, निखिल और किट्टू। गाँव में मेरी दिनचर्या थोड़ी अलग थी। शाम होते ही सारे बच्चे खेल में मग्न हो जाते थे, और मैं अकेला अपनी मशीन पर चला जाता था। मुझे वहाँ गाय-भैंसों को पानी पिलाना और सानी-भूसा देना होता था। यह मेरा रोज़ का काम था, और मुझे अकेले जाना बिल्कुल पसंद नहीं था।

इसलिए मैं हमेशा कोई न कोई तरकीब निकालता था ताकि मेरे दोस्त भी मेरे साथ चलें। एक दिन, जब हम सब गांव में खेल रहे थे, मैं मौका देखकर बोला, ''अरे, क्या तुम लोग यहीं अटके रहोगे? चलो मेरे मशीन पर, आज वहाँ गन्ने की पेराई हुई है। हम सब मिलकर ताज़ा-ताज़ा गुड़ खाएंगे और महिया भी चाटेंगे।''

बस, इतना सुनना था कि मेरे तीनों दोस्तों के चेहरे चमक उठे। प्रकाश बोला, ''चल! आज तो मज़ा आएगा।'' निखिल और किट्टू भी तुरंत तैयार हो गए। उन्हें पता था कि मेरे बहाने कभी बेकार नहीं होते।

दरअसल, मेरे खेत में एक मशीन थी, जहाँ गन्ने से गुड़ बनता था, और एक बड़ा-सा बगीचा था जिसमें आम, अमरूद, नींबू जैसे कई पेड़ थे। वहाँ खेलने का मज़ा ही कुछ और था। हम लोग पेड़ों पर चढ़कर 'ओला-पाती' खेलते, मशीन पर 'आईस-बाइस' खेलते, और खूब मस्ती करते थे। उन्हें फुसलाने का यह मेरा पक्का तरीका था—खेल और खाने का लालच देकर, वह खाने के नाम पर तुरंत तैयार हो जाते थे ।

तो उस दिन भी, मैं उन्हें अपने साथ ले आया। मुझे लगा कि मेरा काम जल्दी हो जाएगा और सब मिलकर मौज-मस्ती भी कर लेंगे। लेकिन यह तो मेरी ज़िंदगी की सबसे बड़ी गलती बन गई। जब हम सब मशीन पर पहुँचे तो देखा कि गुड़ दोपहर में ही बन गया था और कोठरी में बंद था।

मैंने जेब टटोली तो चाबी नहीं थी। तभी किट्टू की नज़र कड़ाहे पर पड़ी। 'देखो गोलू भैया! कड़ाहे में अभी भी गुड़ लगा है,' वही खा लेते है, सभी ने कहा।

'हां! खा लो,' मैंने तुरंत कहा। मैंने सोचा, 'चलो, अभी तो काम चला लो।'

तीनों दौड़कर करहा के पास गए और उसे थूनी से लगा दिए क्यूंकि करहा इतना बड़ा था की बीच में हाथ नहीं जा पा रहा था इसलिए गोलू आकर थूनी लगा दिया बोला खा लो। लेकिन ये तीनों इतना खाने में लीन हो गए कि कब किसके पीठ से थूनी लगा की तीनों उसी करहा से दब गए

मैं अपनी गाय-भैंसों को सानी-भूसा दे रहा था। मेरा काम खत्म हो गया था, और मुझे लगा कि वो तीनों भी आ गए होंगे। मैंने सोचा, 'लगता है आज उन्हें गुड़ का नशा चढ़ गया है।'

तभी मुझे एक धीमी सी आवाज़ सुनाई दी। 'गोलू! बचाओ! बचाओ!

तीनों आपस में बात कर रहे थे, कि लग रहा है गोलुवा सुन नहीं पा रहा है

मैं सोचने लगा, 'कौन है? कहाँ से आवाज़ आ रही है?'

मुझे शक हुआ कि कहीं वो कड़ाहे में तो नहीं दब गए? मैं दौड़ा-दौड़ा गया और देखा कि वो तीनों सचमुच कड़ाहे में दबे हुए थे।

दौड़कर आया और बोला प्रकाशवा निखिला कहा हउआ सो तब तक कड़ाहे से आवाज आया, 'अरे हित उठावा पहिले।'

मैंने जैसे ही उस कड़ाहे को उठाया, वो तीनों ऐसे बाहर भागे जैसे किसी ने पीछे से डंडा मार दिया हो। उनके कपड़े और चेहरे पर गुड़ और कालिख लगी हुई थी, और वो एक दूसरे से बात करने लगे, 'आज के बाद इसके साथ कभी भी मशीन पर नहीं जाएंगे।'

गुड़ खाए के चक्कर में कहा फस गैली जा ।

मैंने मन ही मन सोचा, 'अब इन्हें अगली बार कैसे फुसलाऊँगा?

मुझे आज भी वो दिन याद है और उस दिन की शरारत भरी घटना। मेरे बचपन की कहानियों में से एक यह भी थी।

आपको मेरी कहानी कैसी लगी? क्या आप जानना चाहेंगे कि अगली बार मैं उन्हें कैसे फुसलाकर ले गया?

***